ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 3 कुल पृष्ठ-8 27 सितम्बर से 3 अक्टूबर, 2018, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 अ.शु.-02

आर्य जगत् की महान विभूति, प्रसिद्ध दानवीर, राष्ट्र के सजग प्रहरी ठा. विक्रम सिंह जी के 75वें जन्म दिवस के अवसर पर दिल्ली के इण्डिया इण्टरनेशनल सेन्टर में अमृत महोत्सव का किया गया भव्य आयोजन

आर्य समाज के अनेक संन्यासियों, विद्वानों आचार्यों एवं उपदेशकों को किया गया सम्मानित

आर्य समाज के प्रतिष्ठित संन्यासियों तथा विद्वानों ने यशस्वी जीवन उत्तम स्वास्थ्य एवं शतायु होने की दी शुभकामनाएँ

आर्य समाज के गौरव, महान विभूति, प्रसिद्ध दानवीर तथा राष्ट्र के सजग प्रहरी ठॉ. विक्रम सिंह जी के 75वें जन्म दिवस के अवसर पर दिल्ली के इण्डिया इण्टरनेशनल सेन्टर, मैक्समूलर रोड, नई दिल्ली में 19 सितम्बर, 2018 को अमृत महोत्सव का भव्य आयोजन आर्यन परिवार की ओर से किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध आर्य संन्यासी, अनेक गुरुकुलों के संचालक, अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल वैदिक परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने की।

इस अवसर पर प्रसिद्ध अर्थशास्त्री, राज्यसभा के सदस्य डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उनके अतिरिक्त सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, वीतराग संन्यासी स्वामी धर्मानन्द जी, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द (पलवल), आर्य वीरदल के संचालक स्वामी देवव्रत, स्वामी सम्पूर्णानन्द, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान एवं पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, डॉ. महावीर मीमांसक, डॉ. रूपकिशोर शास्त्री, सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, डॉ. प्रशस्य मित्र शास्त्री, डॉ. विष्णु मित्र शास्त्री, श्री सुरेन्द्र पाल आर्य नागपुर, श्री रामपाल शास्त्री (दिल्ली), भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री श्याम जाजू, वैदिक विद्वान् पं. सत्यानन्द वेद वागीश, डॉ. वागीश जी (एटा), डॉ. आनन्द कुमार पूर्व आई.पी.एस., महामंत्री राष्ट्र निर्माण पार्टी, श्री अनिल आर्य केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष, डॉ. वेद प्रकाश शर्मा आई.पी.एस., आर्य पुरोहित सभा के अध्यक्ष श्री प्रेमपाल शास्त्री, आचार्य सत्यजित, आचार्य सोमदेव शास्त्री (अजमेर), आचार्य धर्मवीर शास्त्री, पं. मेघश्याम वेदालंकार, डॉ. वीरपाल वेदालंकार, डॉ. वेदपाल (मेरठ), आचार्य धनन्जय, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, आचार्य ओम प्रकाश (आबू रोड), श्री प्रणव प्रकाश शास्त्री, डॉ. कैलाश कर्मठ, श्री सहदेव बेधड़क, श्री सोमपाल, डॉ. प्रियंवदा वेदभारती, डॉ. पवित्रा विद्यालंकार, आचार्या सुकामा जी, डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, डॉ. धारणा याज्ञिकी, आदि संन्यासियों एवं विद्वानों ने ठा. विक्रम सिंह जी को दीर्घायुष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं यशस्वी होने की कामना करते हुए शुभकामनाएँ प्रदान की।

विदित हो कि ठा. विक्रम सिंह जी द्वारा आर्य जगत् में इसी प्रकार समय–समय पर उपदेशक वर्ग, संन्यासी वर्ग, विद्वत वर्ग तथा गुरुकुलों, गौशालाओं एवं विविध संस्थाओं को मुक्त हस्त से दान एवं सहयोग प्रदान किया जा रहा है। जिस कारण वे सम्पूर्ण आर्य जगत् में शीर्ष स्थान प्राप्त कर चुके हैं। समस्त विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए उनकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की और कहा कि ठॉ. विक्रम सिंह जी का पूरा परिवार आर्य विचारधारा से ओत–प्रोत है और उन सबकी उदात्त भावनाओं के अनुरूप ही ठाकुर साहब आर्य समाज के भामाशाह के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके हैं। उनका यह योगदान इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। ठाकुर साहब के सम्मान के पश्चात् आर्यन परिवार की ओर से समस्त संन्यासियों, विद्वानों एवं आचार्यों को शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र एवं विशेष भेंट राशि प्रदान करके सम्मानित किया गया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन आर्य जगत् के प्रसिद्ध युवा विद्वान् संस्कृत अकादमी, दिल्ली के पूर्व सचिव डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री ने बड़ी ही कुशलता के साथ किया। उन्होंने ठाकुर साहब के जीवन पर विशेष प्रकाश डालते हुए उनका विस्तृत शेष पृष्ठ 5 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

मरते हुए रिश्तों का सच

– अशोक आर्य

19वीं शताब्दी के महान् चिन्तक, भारतीय मनीषा के गहन अध्येता, उच्चतम कोटि के दार्शनिक तथा मनोवैज्ञानिक महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने महान् ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि जितना माता से संतानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है, उतना अन्य किसी से नहीं। जैसे माता संतानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता। यहाँ 'नहीं करता' में निश्चयात्मक कथन है अर्थात् इसमें संदेह की कोई गुंजाइश ही नहीं है, अतः वे उस संतान को अत्यन्त भाग्यवान मानते हैं जिसके माता–पिता धार्मिक, विद्वान् हों। महर्षि दयानन्द इसी समुल्लास में माता–पिता के प्रमुख कर्तव्य का निरूपण करते हुए लिखते हैं– 'यही माता–पिता का कर्तव्य कर्म, परम धर्म और कीर्ति का काम है जो अपने संतानों को तन, मन और धन से विद्या, धर्म और सभ्यता और उत्तम शिक्षा युक्त करना'। संतानों में अपने कर्तव्य के प्रति अभी से भावनाएँ सुगुम्फित हों अतः वे इसी द्वितीय समुल्लास में लिखते हैं कि बालक–बालिकाओं को चाहिए कि वे अपने माता, पिता और आचार्य की तन, मन धनादि उत्तम उत्तम पदार्थों से प्रीतिपूर्वक सेवा करें।

हमने यहाँ इन उच्चादर्शों से युक्त निर्देशों को उद्धृत क्यों किया है? वस्तुतः सत्यार्थ प्रकाश मानव जीवन की आचार संहिता है। अगर इसमें सन्निहित शिक्षाओं और आदर्शों के अनुसार अपने घर–परिवार और समाज का निर्माण किया जाय तो फिर कोई कारण नहीं है कि आज भी राम और श्रवण कुमार जैसे पुत्र उत्पन्न न हों, भरत जैसे भाई न हों और एक ऐसा समाज निर्मित न हो जहाँ समता, सौहार्द, सामंजस्य, आत्मीयता से परिपूर्ण परिवेश में मनुष्य अपने अंतिम लक्ष्य को प्राप्त कर सके। आज स्थिति विपरीत है। परिवार टूट रहे हैं, रिश्तों में स्वार्थ घर कर गया है। त्याग की वह भित्ति जिस पर मानवता का आलीशान भवन अवस्थित है, आज दरक रही है।

वेदमाता कृतघ्नता को सबसे बड़ा पाप

बताती है उसी कृतघ्नता ने हमारे हृदयों पर कब्जा कर लिया है। जिन माता–पिता ने हमारे जीवन निर्माण के लिए अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया होता है जिसके बिना हमारी कीमत दो कौड़ी की भी नहीं होती, वही आज हमें बोझ लगने लगे हैं। हमें लगता है कि परिवार में माता–पितादि बुजुर्गों का होना हमारे सुख में बाधक है। वे अब अनुत्पादक होने से हमारे किसी काम के नहीं, आज की इस हिसाब–किताब की दुनिया की भाषा में कहें तो वे अब 'एसेट' नहीं हमारे लिए 'लायबिलिटी' हैं, जिसे या तो हम मजबूरी में ढो रहे हैं या जिससे छुटकारा पाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

आपने कभी, जिस जतन से माता–पिता, जी हाँ दुनिया के सभी माता–पिता, अपनी संतान का पालन पोषण करते हैं उनका कैरियर बनाने में अपने को आहूत कर देते हैं, उन प्रयत्नों को अपनी स्मृति में रखने का प्रयास किया है? जी नहीं यह हमारा उत्तर है। पालकों के हृदय की उन भावनाओं और उनसे उपजे प्रयत्नों को उकेरा ही नहीं जा सकता। जो संस्कारित परिवार हैं जिनके बालक–बालिका अपने माता–पिता के प्रति अत्यन्त ममत्व, आत्मीयता और श्रद्धा की भावना रखते हैं वे भी उन प्रयत्नों की गहराइयों को सम्पूर्णता से समेट नहीं सकते हैं।

अतः वर्तमान में किसी माता को अपने शिशु का पालन करते हुए ध्यान से देखिये उसके व्यवहार को, उसकी ममता को विश्लेषित करते जाइए और तब जानिये कि यही सब आपकी माँ ने आपके योग क्षेम के लिए किया होगा तब आपको विश्वास होगा कि ममता की कोई सीमा नहीं है। ऐसा कोई आग का दरिया नहीं है जिसे माँ अपने शिशु की खातिर पार न कर ले।

हमें लगता है कि वात्सल्य तो प्रभुप्रदत्त है वह तो प्राणीमात्र को सहज प्राप्त है। उसका अतिरेक माँ का पुरुषार्थ है। मनुष्य जाति ही नहीं पशु–पक्षियों की योनियों में भी माँ बनते ही माँ के अन्दर अपनी संतान के लिए वात्सल्य की हिलोरें उठने लगती हैं। मानवेतरों में यह शिशु के सामर्थ्यवान होने पर शिथिल हो जाती है पर मनुष्य जाति में अनन्त है, कभी चुकना तो दूर शिथिल भी नहीं होती। परन्तु संतानों में पालकों के प्रति जो अनुराग है, कर्तव्य भावना है उसका संस्कारों के माध्यम से विकास करना पड़ता है। ऋषियों द्वारा इस हेतु समुचित प्रावधान करना इस बात का प्रमाण है। पितृ–ऋण तथा पितृ–यज्ञ की अवधारणा इसी हेतु से है। श्राद्ध और तर्पण इसके प्रकार हैं। नित्य कांधे पर धारण किये जाने वाले यज्ञोपवीत के तीन धागों के साथ इसको जोड़ा जाकर सदैव धारणकर्त्ता के ध्यान में निरन्तर अपने ऊपर चढ़े हुए ऋणों में इस एक को भी परिगणित करते रहने की योजना भारतीय मनीषा का वह पक्ष है जिसके चलते घर 'घर' बनता है, 'एसेट' और 'लायबिलिटी' की भाषा पितरों के सन्दर्भ में अंकुरित ही नहीं होती, यह पावन दायित्व निभाने का सुअवसर मिले यह संतान की चाहना बन जाती है। पर आज कहाँ यज्ञोपवीत, कहाँ ऋण–बोध। श्राद्ध और तर्पण वर्ष में 15 दिन में सिमट गए (वो भी पितरों के मरने के बाद) तो फादर्स डे तथा मदर्स डे एक दिन में। अतः संतान की गलती से पूर्व हमारी गलती है कि संतान के लिए सब कुछ किया, लुटकर पिटकर उसे डॉक्टर बनाया, इंजीनियर बनाया, कलेक्टर बनया पर संतान में पितरों के प्रति दायित्व बोध का संस्कार नहीं डाला जिसके अभाव में अरबों की संपत्ति उत्पादित करने वाला पिता आज साधारण किराए के मकान में रहने को मजबूर है। और जिसके अभाव में ही वह हृदय विदारक रूह को कंपा देने वाली घटना घटी जिसके कारण बुजुर्गों के प्रति 'अन्तर्राष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस' को ध्यान में रखते हुए यह आलेख लिखा है।

मुम्बई का ओशीवारा इलाका अति संपन्न लोगों के रहने का ठिकाना है। इसी के दसवें माले के दो फ्लैटों में रहने वाली आशा साहनी ने अपने इकलौते बेटे ऋतुराज पर अपनी सारी आशाएँ खर्च कर दीं। ऋतुराज आई.टी, सेक्टर में है और जैसाकि आज चलन हो गया है अच्छे पैकेज के लिए वह अमेरिका में सेटल हो गया है। जब तक पति थे आशा साहनी को अकेलापन नहीं खला। बेटे की याद भी आती होगी तो उसकी तरक्की की प्रसन्नता के तले विछोह के दुःख को दबा दिया होगा। 2013 में पति की मौत के बाद अकेलेपन ने धीरे–धीरे आशा साहनी के बजूद को ग्रसना आरम्भ कर दिया। उसने अप्रैल 16 में अपने बेटे ऋतुराज से फोन पर जो अंतिम बात की थी उसमें उससे यही आग्रह था कि वह वृद्धाश्रम जाना चाहती है।

प्रश्न उठता है कि भव्य फ्लैट और सारे सुख साधनों को त्याग वे वृद्धाश्रम क्यों जाना चाहती थीं, उत्तर एक ही है अकेलेपन की पीड़ा। अकेलेपन का दुःख ऐसा होता है जिसे जिस पर बीतती है वही समझ सकता है। मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि अकेलेपन का अनुभव एक गहन स्तर पर असहनीय अलगाव की भावना से अभिभूत होना भी हो सकता है। यह परित्याग, अस्वीकृति, निराशा, असुरक्षा, चिंता, नैराश्य, निकम्मापन, अर्थहीनता और आक्रोश की भावनाओं में फलीभूत हो सकता है। अगर ये भावनाएँ लंबे समय तक बनी रहें तो वे दुर्बल बना सकती हैं और प्रभावित व्यक्ति को स्वस्थ रिश्ते और जीवन शैली विकसित करने से रोकती हैं। अगर व्यक्ति को विश्वास हो जाए कि वह प्यार के अयोग्य है तो उसकी पीड़ा बढ़ जाती है और वह सामाजिक सम्पर्क से कतराने लगता है। आत्मसम्मान में कमी से अक्सर सामाजिक वियोग उत्पन्न होता है जिससे अकेलापन हो सकता हैं। यहाँ अवसाद कब आपको जकड़ लेता है पता ही नहीं चलता।

आशा जी की कहानी में बेटे की माँ के प्रति दायित्व–निर्वहन की मात्रा शून्य ही थी यह स्पष्ट है। 16 अप्रैल को वह माँ को फोन करता है, बातचीत में मतभेद पैदा होता है और माँ यह कहकर फोन रख देती है कि आइन्दा उसे फोन न करे। इसके बाद आप होते तो क्या करते? अगर ऋतुराज जैसी निष्ठुरता तथा असंवेदनशीलता आपमें नहीं है तो दुनिया का लगभग हर बेटा बार–बार माँ से बात करने का प्रयत्न करता और तब भी बात

शेष पृष्ठ 7 पर

4 अक्टूबर जन्म दिवस पर विशेष

महान क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा

- वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

महान् देशभक्त एवं क्रान्तिकारी शिरोमणि श्यामजी 'कृष्ण वर्मा स्वातन्त्र्य समर के अप्रतिम योद्धा थे। स्वतन्त्रता यज्ञ के लिए उन्होंने अपने आपको समर्पित किया हुआ था। इस याज्ञिक अग्नि का आधान किया था आग्नेय व्रती आग्नेय वस्त्र धारी महर्षि दयानन्द ने। वह स्वाधीनता का सर्वप्रथम उद्घोषक था। उसने ही अपने प्रवचनों तथा लेखन के माध्यम से इस अग्नि को प्रज्ज्वलित किया था। यज्ञ सामान्य अग्नि नहीं, अपितु स्वातन्त्र्य यज्ञ की अग्नि थी जिसमें स्वधीनता के पुजारी स्वेच्छा से आ-आकर अपनी आहुतियां दे रहे थे। महर्षि दयानन्द ने इसका आधान किया तथा क्रान्तिकारियों ने इसमें अपनी आहुतियाँ देकर इसे सर्वव्यापी बनाया, बढ़ाया, चमकाया। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भी अपना जीवन इस अग्नि को समर्पित कर दिया। श्यामजी महर्षि दयानन्द के प्रमुख शिष्य थे। महर्षि ने उन्हें विदेश जाने की प्रेरणा दी। महर्षि दयानन्द चाहते थे कि श्यामजी विदेश में जाकर भारतीय स्वतन्त्रता की अलख जगाएं तथा वहां के कला-कौशल के आधार पर भारतीयों की निर्धनता के निवारणार्थ यत्न करें। महर्षि दयानन्द से श्यामजी की भेंट 1875 ई. में हुई तभी उन्होंने मुम्बई आर्य समाज की सदस्यता भी ग्रहण की जो कि महर्षि के द्वारा स्थापित सर्वप्रथम समाज था। 1883 ई. में महर्षि ने श्यामजी को अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का सदस्य मनोनीत किया।

श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर, 1857 को सौराष्ट्र गुजरात प्रदेश के मांडनी ग्राम में श्री कृष्ण जी वर्मा के घर हुआ था। 1875 में उनका विवाह सेठ छबीलदास लल्लू भाई की सुपुत्री भानुमती से हुआ। 1877 में श्याम जी ने समाज सुधार के लिए उत्तरी तथा पश्चिम भारत की यात्राएं की। श्यामजी असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे। 5 फुट 10 इंच लम्बा उनका गठीला शरीर तथा तेजस्वी मस्तक सभी को अपनी ओर आकृष्ट करता था।

श्यामजी कृष्ण वर्मा अप्रतिम विद्वान् थे। संस्कृत साहित्य पर उनका असाधारण अधिकार था। इसके साथ ही उन्हें यूरोपीय संस्कृति तथा साहित्य का भी अच्छा ज्ञान था। वे अंग्रेजी के साथ-साथ अन्य भाषाओं के भी ज्ञाता थे। अपने अगाध ज्ञान के आधार पर श्यामजी कुशल लेखक तथा प्रभावशाली वक्ता थे। उनके भाषण तथा लेख तथ्यों से भरपूर होते थे जोकि पाठकों तथा श्रोताओं पर अद्भुत प्रभाव डालते थे। लंदन के ट्राईड पार्क में उनके भाषण से प्रभावित होकर ही मैडम कामा क्रान्तिकारी दल में सम्मिलित हो गई थी।

श्यामजी के विचारों एवं कार्यों में दृढ़ता एवं स्पष्टता थी, जो उन्हें अपने गुरु महर्षि दयानन्द से सहजरूप में ही प्राप्त थी। विचारों की इसी दृढ़ता तथा स्पष्टता के कारण श्यामजी ने राष्ट्रीय आन्दोलन का उचित मार्गदर्शन किया। श्यामजी ने अपने सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ मुम्बई के समाज सुधार आन्दोलन से किया। माधवदास रघुनाथ दास के द्वारा प्रारम्भ किए गए विधवा विवाह आन्दोलन में श्यामजी ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। स्वामी दयानन्द तो उनके प्रेरणा स्रोत थे ही। स्वामी जी के निर्वाण के उपरान्त रूढ़िवादियों को उत्तर देने के लिए श्यामजी ही सक्षम थे। उनकी इसी विशेषता के कारण 1889 में पूना के पण्डितों की चुनौती का सामना करने के लिए जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे ने उन्हें सादर आमन्त्रित किया था।

इसके पश्चात् श्यामजी ने भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन को अपना लक्ष्य बनाया। उनका स्मरणीय कार्य है विदेशों में भी भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष की सुदृढ़ आधारशिला रखना। वहां रहकर उन्होंने इस आन्दोलन को दिग-दिगन्त तक पहुंचा दिया। श्यामजी के विषय में जर्मनी की पत्रिका 'दि जेनाक्रिफ्ट' ने लिखा था कि अंग्रेज श्यामजी कृष्ण वर्मा के आन्दोलन से

उतने ही भयभीत है। जितने कि जर्मनी के द्वारा आक्रमण के भय से।

विदेशों में स्वाधीनता के आन्दोलन को स्थायी रूप देने के लिए श्यामजी ने जुलाई 1905 में लन्दन में 'इण्डिया हाऊस' खरीदा। इण्डिया हाऊस क्रान्तिकारियों का अड्डा था। यही पर स्वतन्त्रता के विषय में गुप्त मन्त्रणाएं होती थीं जिनसे क्रान्ति की चिन्गारी फूटती थी। 1905 में ही श्यामजी ने अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए 'इण्डियन सोशियोलोजिस्ट, लंगदन' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। स्वाधीनता के विचारों के साथ-साथ इसमें सामाजिक एवं धार्मिक सुधारों के विषय में भी पर्याप्त सामग्री रहती थी। इस पत्र को सुदृढ़ एवं स्थायी करने के लिए 1905 में ही श्यामजी ने 'होमरूल सोसायटी' का गठन भी किया।

क्रान्ति के पक्षधर होने के साथ-साथ श्याम जी यह भी मानते थे कि बहिष्कार या असहयोग के द्वारा भी अंग्रेजी राज्य को निष्प्रभावी बनाया जा सकता था। महात्मा गांधी तो असहयोग आन्दोलन के पक्षधर थे ही। श्यामजी ने भी गांधी जी के नेतृत्व में 1920-21 में चलाए जा रहे असहयोग आन्दोलन का समर्थन किया।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने स्वाधीनता आन्दोलन को जो कुशल नेतृत्व प्रदान किया इससे राष्ट्रवादियों का क्षेत्र व्यापक होता गया। श्यामजी के प्रचार का जर्मनी प्रभृति यूरोपीय देशों में पर्याप्त प्रभाव पड़ा। वस्तुतः भारतीय राष्ट्रवादियों को जर्मनी का नैतिक तथा सैनिक समर्थन मिलना श्यामजी के प्रचार का ही परिणाम था। विदेशों में श्यामजी को पर्याप्त ख्याति प्राप्त हुई।

श्यामजी ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद का सशक्त विरोध किया। उनके विरोध के कारण ही कई वर्षों तक एंग्लो अमेरिकन सन्धि न हो सकी। श्यामजी निर्भीक होकर राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर लिखते थे।

अप्रैल 1912 में उन्होंने एक खुले पत्र में अमेरीकन प्रेजीटेण्ड टैफ्ट को इंग्लैण्ड के साथ सन्धि वार्ता के लिए धिक्कारा था क्योंकि उनकी दृष्टि में इंग्लैण्ड स्वयं दूसरे देशों को गुलाम बनाने वाला डाकुओं का शिरोमणि देश था। इस पत्र से प्रेरणा पाकर ही आयरिश मूल के अमेरिकियों ने ऐंग्लो अमेरीकन सन्धि के विरूद्ध आन्दोलन किया था जिससे वह सन्धिवार्ता विफल हो गई। इस प्रकार श्याम जी का क्षेत्र भारत की स्वतन्त्रता तक ही सीमित न था, अपितु अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भी उनका प्रचुर वर्चस्व था।

1905 में श्यामजी ने भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता का लक्ष्य घोषित किया जबकि अन्य लोग औपनिवेशिक राज्य लेने के भी पक्षधर थे। इस सम्बन्ध में श्यामजी ने एक लम्बा लेख भी लिखा था। वे इंग्लैण्ड तथा भारत के सम्बन्ध को भेड़िये तथा भेड़ के सम्बन्ध की तरह देखते थे जिसमें भेड़िया किसी न किसी बहाने से भेड़ के प्राण लेने की सोचता रहता है। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर किए जाने वाले अत्याचारों, आर्थिक, शोषण, राजनीतिक, दुरावस्था तथा नैतिक ह्रास का यथार्थ चित्रण किया। 'वस्तुतः श्यामजी के स्पष्ट चिन्तन तथा लेखनी ने राष्ट्रीय आन्दोलन की दिशा निर्धारित की। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के उस प्रचार को निरस्त कर दिया जिसके कारण अनेक भारतीय भी अंग्रेजी राज्य के प्रशंसक थे। श्यामजी की स्पष्ट धारणा थी कि भारत के सर्वतोमुखी पतन तथा आर्थिक पिछड़ेपन के लिए अंग्रेजी राज्य ही उत्तरदायी है। इसका समाधान केवल पूर्ण स्वतन्त्रता है। इसके लिए वे असहयोग एवं बहिष्कार को प्रमुख साधन मानते थे।

विदेशों में स्वाधीनता की ज्योति जलाते हुए भारत में भी श्यामजी ने राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। 1885 में रतलाम स्टेट के दीवान बने। 1888 में अजमेर नगर पालिका के अध्यक्ष बने। 1892 में मेवाड़ स्टेट कौंसिल के सदस्य बने तथा 1995 में जूनागढ़ स्टेट के दीवान बने।

1897 में लोकमान्य की गिरफ्तारी पर श्यामजी लंदन चले गए। 1899 में उन्होंने प्रेस स्वतन्त्रता पर जार्ज बर्नार्ड शा का समर्थन किया। 1899 में ही ट्रांसवाला युद्ध में अंग्रेजों के विरूद्ध प्रेजीडेंट क्रूजर का समर्थन किया। 1908 में श्यामजी पेरिस गए। उन्होंने 1909 में हुतात्मा मदन लाल ढींगरा का समर्थन तथा 1911 में हार्डिंग बम विस्फोट पर क्रान्तिकारियों का समर्थन किया। 1914 में उन्होंने जेनेवा के लिए प्रस्थान किया तथा 1919 में गांधीजी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन का समर्थन किया।

इस प्रकार अपना सम्पूर्ण जीवन भारतीय स्वाधीनता के लिए समर्पित कर देने वाला भारत माता का यह सपूत 31 मार्च 1930 को चिर निन्द्रा में सो गया। 22 अगस्त 1932 को उनकी धर्मपत्नी भानुमती का भी देहावसान हो गया। श्यामजी की अस्थियां भारत की धरोहर थी। वह भारत को अब प्राप्त हो गयी।

- बी-266 सरस्वती विहार, दिल्ली-34

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त त्यागी, तपस्वी एवं ओजस्वी संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी के

80वें जन्मदिवस पर देश–विदेश से उनके शुभचिन्तकों ने लगाई शुभकामनाओं की झड़ी

वाराणसी में 80 पौधे लगाकर सामाजिक कार्यकर्ताओं ने

सादगी के साथ मनाया स्वामी जी का जन्मदिन

आर्य समाज के प्रसिद्ध त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी विश्वविख्यात स्वामी अग्निवेश जी का 80वाँ जन्मदिन एक सादे समारोह में वाराणसी के विभिन्न सामाजिक संगठनों ने मिलकर मनाया। इस अवसर पर स्वामी जी के हाथ से 80 पौधे कार्यकर्ताओं को बँटवाये गये और उन्हें विभिन्न स्थानों पर लगाया गया। सैकड़ों सामाजिक कार्यकर्ताओं ने स्वामी जी को जन्मदिवस की बधाई देकर उनके दीर्घायुष्य की कामना की। विदित हो कि स्वामी अग्निवेश जी के शुभचिन्तकों ने देश–विदेश से बधाई एवं शुभकामनाओं की झड़ी लगाकर उनके प्रति अपनी श्रद्धा एवं भावनाएँ व्यक्त की।

स्वामी अग्निवेश जी किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। बचपन से ही आचार्य रमाकान्त उपाध्याय की प्रेरणा से आर्य समाज के सम्पर्क में आने के पश्चात् वे समाज की अनेक रुढ़ियों एवं अन्धविश्वास से पूर्ण परम्पराओं को तोड़कर आर्य समाज के एक तेजस्वी संन्यासी के रूप में प्रतिष्ठित हुए। आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती (पं. बुद्धदेव विद्यालंकार) की प्रेरणा से वे हरियाणा में स्थित गुरुकुल झज्जर के आचार्य स्वामी ओमानन्द (आचार्य भगवानदेव) एवं तत्कालीन प्रधानाचार्य स्वामी इन्द्रवेश (ब्र. इन्द्रदेव मेधार्थी) के सम्पर्क में आये और फिर आर्य समाज को सर्वात्मना समर्पित हो गये। कलकत्ता के एक प्रतिष्ठित कालेज में बिजनेस मैनेजमेंट तथा कामर्स के प्रोफेसर श्याम राव अपनी प्रतिष्ठित नौकरी को त्यागकर संघर्ष एवं तप के रास्ते के पथिक बन गये। उन्होंने स्वामी इन्द्रवेश जी के साथ सन् 1970 में रोहतक के दयानन्द मठ में वीतराग संन्यासी स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक से संन्यास की दीक्षा ली तथा वे अग्निवेश बन गये।

1967 से 2018 तक लगभग आधी शताब्दी का समय उन्होंने समाज के दबे, कुचले, शोषित, पीड़ित एवं बंधुआ मजदूरों के लिए संघर्ष में बिताया तथा आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विचारों को अपनी प्रखर लेखन एवं भाषणशैली से जन–जन तक पहुँचाने का जबरदस्त अभियान चलाया। स्वामी अग्निवेश जी ने सती प्रथा, महिला उत्पीड़न एवं कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य प्रथाओं के विरुद्ध ऐतिहासिक आन्दोलन चलाकर केन्द्रीय एवं प्रान्तीय सरकारों को कानून बनाने के लिए मजबूर किया। सती प्रथा के विरुद्ध दिल्ली से देवराला की पदयात्रा का आयोजन करके और अपनी जान को जोखिम में डालकर स्वामी अग्निवेश जी ने सारे देश की आत्मा को झकझोर दिया और परिणामस्वरूप तत्कालीन केन्द्र सरकार ने सती प्रथा के विरुद्ध सख्त कानून बनाकर सदा–सदा के लिए न केवल सती प्रथा पर प्रतिबन्ध लगाया बल्कि इसके महिमा मण्डन पर भी रोक लगा दी। इसी प्रकार कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य पाप के विरुद्ध भी स्वामी अग्निवेश जी ने सर्वप्रथम आवाज उठाई तथा गुजरात के टंकारा से अमृतसर तक वर्ष 2005 में 'सर्वधर्म जन–चेतना यात्रा' का आयोजन करके पूरे देश के सामने इस जघन्य पाप एवं अपराध का पटाक्षेप किया।

आर्य समाज की ओर से स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में शुरू किये गये कन्या भ्रूण हत्या विरोधी 'बेटी बचाओ अभियान' से ही प्रान्तीय एवं केन्द्र सरकार को यह ज्ञात हुआ कि देश में लिंगानुपात में आई गिरावट के पीछे कन्या भ्रूण हत्या प्रमुख कारण है। इसी प्रकार हरियाणा में पूर्ण शराबबन्दी का आन्दोलन सन् 1992 से 1996 तक स्वामी इन्द्रवेश जी और स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में चलाया गया, उनके साथ–साथ स्वामी ओमानन्द जी एवं प्रो. शेर सिंह जी आदि ने भी शराब के विरुद्ध मोर्चा लगाया। इसके लिए पूरे प्रदेश की जन–चेतना यात्राएँ, हजारों सम्मेलन, शराबबन्दी संघर्ष समितियों का ग्राम स्तर पर गठन तथा सरकार द्वारा शराब के ठेकों की बोली के आयोजनों का जबरदस्त विरोध

करके पूरे हरियाणा को शराब के खिलाफ खड़ा कर दिया। परिणामस्वरूप 1996 के हरियाणा विधानसभा के चुनाव में सभी राजनीतिक पार्टियों ने शराबबन्दी को अपने घोषणा पत्र का प्रमुख हिस्सा बनाया और जनता को चीख–चीख कर आश्वासन दिया कि यदि वे सत्ता में आये तो वे अवश्य ही शराबबन्दी लागू करेंगे। हरियाणा की जनता ने चौ. बंशीलाल जी को सत्ता सौंपी और उन्होंने मुख्यमंत्री की शपथ लेने के 5 मिनट बाद ही पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की घोषणा कर दी। किसानों के हित के लिए स्वामी अग्निवेश जी ने स्वामी इन्द्रवेश जी, श्री शरद जोशी, श्री महेन्द्र सिंह टिकैत, श्री प्रकाश सिंह बादल आदि किसान नेताओं के साथ मिलकर बड़े–बड़े किसान आन्दोलनों में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और अनेक बार जेल भी गये। 1973 के अध्यापकों का आन्दोलन, 1974 का जे.पी. आन्दोलन और छात्र आन्दोलन में स्वामी अग्निवेश जी ने सक्रिय भूमिका निभाते हुए अपना योगदान दिया और सन् 1975 से 1977 के बीच आपातकाल के दौरान वे 19 महीने जेल में रहे। बंधुआ मुक्ति मोर्चा के माध्यम से उन्होंने देश के बेजुबान बंधुआ मजदूरों, दलितों तथा आदिवासियों की आवाज उठाई जिसके बदले उनके ऊपर कई बार जानलेवा हमले भी किये गये। हरियाणा में शिक्षामंत्री एवं शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष का दायित्व निभाते हुए स्वामी जी ने अपने कार्य का कीर्तिमान स्थापित किया। उन्होंने हरियाणा की सभी स्कूलों में निर्देश प्रेषित किया था कि कोई भी अध्यापक स्कूल के प्रांगण में धूमपान या अन्य किसी भी प्रकार का नशा नहीं कर सकता। इसी प्रकार जब हरियाणा सरकार ने फरीदाबाद में निर्दोष फैक्टरी मजदूरों पर गोली चलाई और 13 मजदूर उस गोली काण्ड में मारे गये तो स्वामी अग्निवेश जी ने अपनी ही सरकार के विरुद्ध आवाज उठाई और गोली काण्ड की निष्पक्ष जाँच की माँग की। इस पर उन्होंने शिक्षामंत्री पद भी त्याग दिया। स्वामी अग्निवेश जी के इस तेजस्वी, त्यागपूर्ण एवं संघर्ष से ओत–प्रोत व्यक्तित्व एवं कार्यों से प्रभावित होकर संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव ने उन्हें समकालीन दासता विरोधी संगठन का 9 वर्ष तक अध्यक्ष पद प्रदान कर उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संन्यासी बना दिया। स्वामी अग्निवेश जी संयुक्त राष्ट्र में पहले व्यक्ति थे जिन्हें बिना किसी सरकार की सिफारिश के इतना प्रतिष्ठित पद प्रदान किया गया था। स्वामी अग्निवेश जी को निवानो पीस फाउण्डेशन जो जापान में एक अत्यन्त प्रतिष्ठित संस्थान है का सदस्य बनाया गया और उनके साथ श्री नेल्सन मंडेला सहित 10 राष्ट्राध्यक्ष भी उस संस्थान में सदस्य मनोनीत थे। इस संस्थान के द्वारा प्रतिवर्ष दुनिया के किसी एक व्यक्ति को उसके समाजसेवा के कार्यों के लिए चुना जाता था और एक करोड़ रुपया पारितोषिक उसे सम्मान स्वरूप प्रदान किया जाता था। इस एक व्यक्ति के चयन में उन 10 राष्ट्राध्यक्षों के साथ स्वामी अग्निवेश जी भी एक महत्त्वपूर्ण सदस्य थे और उनकी संस्तुति से यह चयन प्रक्रिया पूरी होती थी। स्वामी अग्निवेश जी को 'राइट लाइवली हुड सम्मान' (Right Livelihood Award) जो वैकल्पिक नोबल प्राइस के रूप में माना जाता है से नवाजा गया। राजीव गाँधी सम्प्रदाय सद्भाव सम्मान से सम्मानित किया गया तथा देश–विदेश में अनेक प्रतिष्ठित सम्मान भी उन्हें दिये गये। स्वामी अग्निवेश जी पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने अरब के राजा किंग अब्दुल्ला को अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया। अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज बुश को चारों वेदों का सैट भेंट किया। उन्होंने अनेक राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लेकर साम्प्रदायिकता, जातिवाद, नस्लवाद, गरीबी, गैर–बराबरी, मांसाहार, धार्मिक अन्धविश्वास तथा महिला उत्पीड़न के विरुद्ध प्रचण्ड आवाज उठाई। स्वामी जी राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल पक्षधर, वेदों को समस्त ज्ञान–विज्ञान का आदि स्रोत मानने वाले प्रवक्ता तथा वसुधैव कुटुम्बकम् की उदात्त भावना को पूरे विश्व में प्रचारित–प्रसारित करने वाले मानवतावादी दृष्टिकोण के पृष्ठ पोषक तेजस्वी संन्यासी हैं। उनके जीवन की मुख्यधारा प्रारम्भ से ही मानव मात्र की सेवा एवं समाज में एक समतामूलक वैदिक समाज बनाने की रही है। जीवन के इस मोड़ पर जब वे 80वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं प्रभु से प्रार्थना है कि वे स्वस्थ रहते हुए शतायु प्राप्त करें तथा वैदिक सिद्धान्तों को पूरे विश्व में प्रचारित–प्रसारित करने का अभिनव अभियान जारी रखें। सम्पूर्ण आर्य जगत् की ओर से उन्हें जन्मदिवस की बहुत–बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान, साहित्यकार, समाजसेवी

डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का किया गया आयोजन

अनेक गणमान्य महानुभावों ने दी भावभीनी श्रद्धांजलि

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान, उच्चकोटि के लेखक, साहित्यकार, मनीषी एवं समाजसेवी डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया जी का 14 सितम्बर, 2018 को अकस्मात देहावसान हो गया। दिनांक 18 सितम्बर, 2018 को आर्य समाज जनकपुरी, ब्लाक–बी–1, नई दिल्ली में उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, पद्मभूषण डॉ. श्याम सिंह शशि, श्री आशीष सूद महामंत्री भाजपा दिल्ली प्रदेश, पूर्व महापौर श्री पृथ्वीराज साहनी, पूर्व पार्षद श्री यशपाल आर्य, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य, स्वामी धर्ममुनि बहादुरगढ़, साध्वी उत्तमा यति, श्री सुखदेव आर्य तपस्वी, राष्ट्रीय कवि डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी, दिल्ली सभा के मंत्री श्री विनय आर्य, आर्य समाज के पूर्व प्रधान श्री रामकृष्ण सतीजा, श्री शिवकुमार मदान, श्री अजय तनेजा, श्री जगदीश गुलाटी, श्री विनोद किंकर, डॉ. अरुण भगत साहित्यकार, श्री हीरालाल चावला, श्री बलदेव राज शुद्धिसभा, श्री वीरेन्द्र सरदाना वेद प्रचार मण्डल, श्री के. एल. मित्तल, श्री अश्विनी खन्ना रामलीला कमेटी, श्री राकेश तनेजा सनातन धर्म मंदिर, श्री कृष्ण बवेजा, श्री वीरेन्द्र खट्टर, आर्य समाज के धर्माचार्य श्री योगेन्द्र कुमार शास्त्री, श्री ओम सपरा प्रधान उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, श्री कै. अशोक गुलाटी नोएडा आदि महानुभावों ने दिवंगत डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने सार्वदेशिक सभा की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए डॉ. कथूरिया के निधन को आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति बताया। उन्होंने कहा कि डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया आर्य समाज के गौरव थे तथा वैदिक सिद्धान्तों के उच्च कोटि के मर्मज्ञ विद्वान् थे। साहित्य जगत में उनकी विशेष प्रतिष्ठा थी और उसी के कारण हाल ही में उत्तर प्रदेश हिन्दी अकादमी ने उन्हें उनके पुस्तक लेखन एवं साहित्य सेवा के लिए दो लाख रुपये से पुरस्कृत करने की घोषणा की थी। स्वामी जी ने बताया कि डॉ. कथूरिया जी को पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित करने हेतु सार्वदेशिक सभा ने भारत सरकार को विशेष आवेदन किया था किन्तु ईश्वर की व्यवस्था निश्चित है, उसमें कहीं कुछ परिवर्तन नहीं हो सकता और वे अपने इन प्राप्त होने वाले सम्मान से पहले ही सदा के लिए विदा हो गये। स्वामी जी ने कहा कि डॉ. कथूरिया जी एक स्पष्टवादी नेता तथा लोकप्रिय विद्वान् थे।

पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि ने गहरा दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि 13 सितम्बर, 2018 को वे उनसे मिलने उनके घर आये थे और कई विषयों पर उन्होंने मुझसे चर्चा की थी किन्तु अगले ही दिन 14 सितम्बर, 2018 को वे अचानक कूच कर गये। यह मेरे लिए गहरा आघात है। उन्होंने कहा कि डॉ. कथूरिया जैसे प्रखर लेखक, साहित्यकार, स्पष्टवादी वक्ता, अथक परिश्रमी तथा आर्य विचारों से ओत–प्रोत व्यक्तित्व बहुत कम देखने को मिलते हैं। मैं अपने श्रद्धा पुष्प प्रस्तुत करते हुए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

श्री अनिल आर्य ने डॉ. कथूरिया को महर्षि दयानन्द की विचारधारा को अपनी लेखनी से प्रचारित–प्रसारित करने वाला एक अप्रतिम विद्वान बताया। उन्होंने कहा कि वे सदैव केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्यों में अपना आशीर्वाद एवं सहयोग प्रदान करते थे।

श्री विनय आर्य ने डॉ. कथूरिया के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि डॉ. कथूरिया जी का स्नेह उन्हें सदैव प्राप्त रहा और वे समय–समय पर अपना मार्ग दर्शन एवं प्रेरणा हमें देते रहते थे। उनके जाने से रिक्त हुए स्थान की पूर्ति निकट भविष्य में सम्भव नहीं दिखती।

पूर्व महापौर श्री पृथ्वीराज साहनी जी ने कहा कि डॉ. कथूरिया जी हमारे अग्रज थे और उनका हमेशा वरदहस्त हमारे सिर पर बना रहता था। उनके जाने से निःसंदेह समाज का एक मजबूत स्तम्भ गिर गया है।

श्रद्धांजलि सभा का संयोजन करते हुए प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् 'अध्यात्म पथ' पत्रिका के सम्पादक देश–विदेश में विख्यात आचार्य चन्द्रशेखर जी ने कथूरिया जी के जीवन पर अनेक संस्मरण सुनाते हुए प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कथूरिया जी एक अद्भुत प्रतिभा के धनी विद्वान् थे और उनके दिमाग में प्रचार की अनेक योजनाएँ रहती थीं, जिन्हें क्रियान्वित करने के लिए समय–समय पर वे हमारे साथ बैठकर विचार–विमर्श किया करते थे। उन्होंने बताया कि कथूरिया जी को जो राशि पुस्तकों की रायल्टी या पारितोषिक रूप में प्राप्त होती थी उसको वे आर्य समाज के प्रचार हेतु या परोपकारी कार्यों हेतु दान कर दिया करते थे। उनके स्वभाव में स्पष्टवादिता एवं प्रखरता विद्यमान थी। आपातकाल के दौरान वे जेल भी गये और समय–समय पर वे समाज के ज्वलन्त मुद्दों पर अपना दृष्टिकोण एवं मन्तव्य भी प्रस्तुत करते रहते थे। कथूरिया जी की अपनी एक पहचान थी और देश के अनेक बड़े–बड़े लोगों से मधुर सम्बन्ध थे। ऐसे मनीषी का निधन निःसंदेह हम सबके लिए अत्यन्त कष्टदायक है किन्तु ईश्वरीय व्यवस्था को स्वीकार करने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं हो सकता। उनके निधन पर अनेक संस्थाओं की ओर से भेजे गये शोक प्रस्ताव भी पढ़कर सुनाये गये। अन्त में डॉ. कथूरिया जी के सुपुत्र डॉ. वरूण कुमार कथूरिया एवं समस्त परिवारजनों को उपस्थित महानुभावों ने उनका ढांढस बंधाया। सान्त्वना देकर शांति पाठ के पश्चात् श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न हुई।

पृष्ठ 1 का शेष

ठा. विक्रम सिंह जी का अमृत महोत्सव

परिचय प्रस्तुत किया। ठा. विक्रम सिंह जी के सुयोग्य सुपुत्र एवं आई.सी.सी.आर. के सदस्य डॉ. वरुणवीर आर्य ने आर्यन परिवार की ओर से सभी महानुभावों का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित किया और कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि आर्य समाज के शीर्षस्थ संन्यासियों, विद्वानों, आचार्यों/आचार्याओं एवं गणमान्य महानुभावों का आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ हमारे परिवार को और विशेष रूप से हमारे पूज्य पिताश्री को प्राप्त हो रही है। अतः आर्यन परिवार की ओर से मैं आप सबके प्रति हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ और आशा करता हूँ कि समय–समय पर आर्य समाज के कार्यों में हमें सेवा का अवसर देते रहेंगे। डॉ. वरुणवीर जी के अतिरिक्त उनके अन्य भ्राताओं सर्वश्री प्राज्ञ आर्य, राहुल आर्य, इन्द्रवीर आर्य तथा परिवार के अन्य सदस्यों ने भी उत्सव की व्यवस्था में मनोयोग से दायित्व निभाया। कार्यक्रम के पश्चात् आर्यन परिवार की ओर से सभी उपस्थित महानुभावों के लिए सुरुचिकर भोजन की व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम अत्यधिक प्रभावशाली, सफल एवं व्यवस्थित रहा।

भारतेति वृत्तम्

—चन्द्रमोहन शास्त्री वेदवाचस्पति

अयि! मेधाविनो वेदविज्ञानसुनिश्चितार्थाः ब्रह्मविज्ञानप्रणितान्तःकरणाः निगमागम पयःपूरप्लावितहृदयाः योगवितानतनूकृतासाततयः क्षीणकल्मषाः निर्मलाः निर्धूतमलविक्षेपाः वेदविहिताचारप्रचार व्रतिनः आचार्यचरणाः श्रुतिश्रवणपटवोबटवो नीतिनिष्णातादेश दुःखदलन बद्धपरिकरा विभूषितवसुन्धरा लोकपीड़ापाश प्रचुर क्लेश पाटितमनश्चीवरा धीवरा देश हितैषिणश्च महाभागाः-

नाविदितमेतदत्र भवतां भवतांसूक्ष्मेक्षणेन यत्प्राचीनेसमयेऽस्माकं मातृभूमि भारतवर्षं उन्नतेःशिखर मारुरोह। तथाहिवर्णचतुष्टयं वैदिकीमेव सरणिमनुससार। कदाचित्कोऽ श्रुतिपथान्न व्यचालीत्। ब्राह्मणाः सब्राह्मणं सस्वंर सरहस्यं ब्रह्माध्यगीषत ब्रह्मचर्येण। अध्यापयामासुश्च चातुरोवेदान् मानवान्। कल्याणस्यैव मार्गमधिगमयितुं लोकं प्रायतिषत। विपत्तावपिकण्ठगतेऽपिप्राणे वेदमर्यादां नाभांक्षुरिति। राजन्या अपि सिंहशावका इव सिंहैःसह चिक्रीडुः। भूमण्डले चक्रवर्त्तिराज्यं चक्रुः। स्वयं बलवन्तो निर्भया भूत्वा सर्वेभ्यो मानवेभ्योऽभयं प्रादुः। प्रजां स्वप्रजामिव ररक्षुः। एतद्देशीयानां क्षत्रियाणां नामश्रवणमात्रेणैव विदेशीयाः शत्रवः सभीता विदशांभेजुरिति। वणिजो वैश्यत्वं सत्यत्वेनैवाधिजग्मुः। स्वव्यापारपाटवेन स्वदेशं सुरालयं कुबेर भवनमकार्षुः। अनेनैव कारणेन भूः स्वर्णभूमिरितिनिगद्यते लोकैरुद्घोषेण। अलं प्लावितेन शूद्र कुलोत्पन्ना अपि तस्मिन्काले मन्त्रान्दहशुर्यज्ञेषु ब्रह्मत्वं चाधि चक्रुरिति। मध्येकाले यद्यपि वेदाचारप्रचारः शिथिलतामगमत्। वेदनाम्ना पुराणदि ग्रन्था प्रचारिताः। वर्णेषु विशृंखलता समजनि। ब्राह्मणतःसप्रमादाःक्षत्रियाः विलासिनो वैश्याः धनलुब्धाःशूद्राश्च मूर्खा अभूवन्, तथापि देशस्याद्यःपतनं नाभूत्। यथा महाभारते श्रुयतेः- यदा मोहकारणादर्जुनो रणभूमौ विषादमगमत्तदैवोच्चस्वरेण कर्म महात्मयं जगाद भगवान्वार्षणेयः-

कुतस्त्वाकश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन।।

तच्छुत्वा मोहं त्यक्त्वा संज्ञामलभतार्जुन। यदा तु म्लेच्छाचारायवना एतद्देशमधिकृतवन्तस्तदा देशस्य सर्वा समृद्धिरदर्शनं गताः। दुःखदौर्भाग्यमज्ञानं पराधीनता चभृषमनर्तीत्।

आर्याणां भाग्य सूर्योऽस्तमगमत्। अत्राम्किादत्तव्यास महाशयः स्वकीयेग्रन्थे शिवराज-विजये स्वमनः पीडामेव प्रकट्यकरोत। कदाचिदस्मिन्नेव भारतेवर्षे यायजूकै राजसूयादियज्ञाव्ययाजिषात। कदाचिदिहैव वर्षवातातपहिमसहानि तपांसि अतापिवत, सम्प्रति तु म्लेच्छैर्गावो हन्यन्ते, वेदविदार्यन्ते, स्मृतयः सम्मृद्यन्ते, मन्दिराणि मन्दुरी क्रियन्ते, सत्यः पात्यन्ते सन्तश्च सन्ताप्यन्ते, धनानि लुठ्यन्ते, भाष्याणि भ्रशंयित्वा भ्राष्ट्रेषु भर्ज्यन्ते। क्वचिदार्त्तनादाः क्वचिद्रुधिर धारा क्वचिदग्निदाह इत्येव श्रूयतेऽवलोक्यते च वरितइति। अलं पिष्ठपेषणेन। इदानी यस्माकं चदुर्भगानांसमये भारतवर्षस्य का दशेति कोऽभिज्ञोज्ञानान्धतमसि निमज्जते। अस्मिन्नपि विषये स्व वाग्व्यापारं संरत्तम्य पंचनदीयस्य सुदर्शनेति महाशयस्यैव वचनमुद्धरामः- अद्य तावतः बहवः खलु गुरु शब्द वाच्याः वञ्चकाः। देशश्चायं प्रायोऽर्षैकपरायणोऽवि परं विरक्तोऽपवर्गपदाधिकारी। मद्यमांसादिपरायणा अपिस्वर्गमेवसद्यो गच्छन्ति। गोवपामिश्रंघृतं बहुभिर्विकक्रीतं क्रीतं भक्षितं चाथाप्ययं देशः परं धार्मिकः। एकैक कार्षा पणार्थं भ्रातृभिरपि सहाभियोगा प्रवर्तन्ते। तथापि परम सन्तोषी। मिथ्याभाषण परायणोऽपि सत्यवादी। गर्भपातनान्यप्यत्र प्रायः पातिव्रत्ये पदप्रविष्टानि वर्तन्ते। वेश्यावृन्द बहुलोऽपि पत्नीव्रतधारी। परद्वेष परायणोऽपि शान्तिप्रधानः। परस्पर प्रेमपक्षैक मत्यादिरहितोऽपि स्वयं शासनाधिकारी। खड्ग ग्रहणानभिज्ञोऽपि स्वराज्याभिलाषी। परकण्ठकर्तननिपुणोऽपिदयालुः, परकीय नीत्यनभिज्ञोऽपि परम निपुणः, विद्याविहीनापि विद्वांसः, शासनशक्तिरहिता अपि भूपालाः, स्वर्णसिंहासनारूढाः कोषपुष्टिपराश्च संन्यासिनः, अध्ययनहीना यथेच्छभोगपरा अपि ब्रह्मचारिणः, परवञ्चनामेवपरोपकारः, स्वार्थमेव परमार्थः, श्रीमन्त एव सकल सद्गुणगणार्णवा मानास्पदश्चेति, किंबहुनालमिति। उत्थानस्य कारणं तु केवलमेकमेव, वेद विहिताचाराचार्येण परम विदुषा ब्रह्मचारिणा ब्रह्मर्षिणा धिगतयाथातथ्येन भगवता दयानन्देन प्रदर्शितं वैदिकं मार्गमनुसरत, अनुसरतेति शम् इत्योम्।

प्रेषक—आर्येश आर्य
482 रामा अपार्टमेंट, सै.-11 द्वारका, नई दिल्ली

Foeticide: an unpardonable heinous Crime

- Indu Dhiman

Undoubtedly, our Indian constitution has shown liberal view for women who are equally ranked just like men. And it is all admirable to give a tuning to all round development of the nation. The women, in fact, are leading their roles significantly in diferent fields of life. Equally with the status of men, the women are teachers, professors, poets and writers, musicians, players, film makers doctors, engineers, scientists, architecturists, aeronauts, politicians, administrators and what not? They have furnished the important offices like men. They can not be regarded that they can lag behind. They are still in progress, they are conscious enough. In our Sanskrit Literature it is said: 'Yatra Naryestu Pujyante, ramante tatra Devata.' We have glorified the status of ladies in the society.

In spite of all this glorification they are the sordid men who mishandle the ladies and toy with their honour and existence. Generally man is too whimsical to avoid the existence of the son in Comparison to the girl. He wants son to conduct his line. So superiority of the masculine! But it is a rotten idea of his thinking. Where is the equality of genders established respectfully on equal status? Why should we find fault with the feminine gender which is really a master urge for culture and civilisation? If we destroy the existence of 'she' in the form of womb there would be an act of inhuman satisfaction and we will be regarded as disgusted fellows in the society. The foeticide is a crime in the eyes of Law and a sin in the eyes of ethics. One, who is involved in this inhuman action, must be punished harshly by the Government.

The Government should take stern steps to obstruct this evil practice commited in the dark of ignorance. It should be banned for ever. The involved doctors too must be punished then and there. With the help of ultra-sound they diagnose the male or female existence. There should be a strict check-up over the technique.

This evil-practice, if continued for long, will cause a problem of disturbing the ratio between male and female. As a result of foeticide the ratio of female has come down especially in punjab, Haryana and Delhi state. So our educationists and social authorities should come forward to level up all the odds and ills prevalent in the so-called modern society.

There are so many ill factors like dowry-system, rape, fetishism nari-Utpeeran, gambling, consumption of intoxication etc. These are to be prevented to safeguard the woman's case.

On the eve of Deepawali we worship the goddess of wealth but we avoid the live Lakshmi of our family in the form of regard and respect as house wife. Had it been in the past, we could not have the pride over Madalsa, Draupadi, Anusuiya, Sunita, Lakshmi Bai, Meeras, Radha, Sati-parvati, Maitreyee, Gargi, Sanjya so on and so forth.

We should pray to God in these words of Yajurveda-

''भद्रा उत प्रशस्तयो भद्रं मनः कृष्णुष्व वृत्रतूर्ये।
येना समत्सु सासहः।।''

- Thatal Hed, Kangra, (Himachal Pradesh)
दूरभाष : 28081482

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

— लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या—256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/— रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान — सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली—2
दूरभाष :—011—23274771, 23260985

पृष्ठ 2 का शेष

मरते हुए रिश्तों का सच

नहीं होती तो भागकर हिन्दुस्तान आता और अपनी माँ को इस अवसाद से निकालने का हर संभव प्रयास करता। पर ऋतुराज ने ऐसा नहीं किया। लगभग 6 मास बाद वह ओशीवारा पुलिस स्टेशन में शिकायत अवश्य लिखवाता है कि उसकी माँ की ओर से उसे कोई समाचार नहीं मिल रहा। मिसिंग पर्सन की रिपोर्ट लिखाने व उसकी प्राप्ति की सूचना के बाद वह पुलिस पर भी त्वरित कार्यवाही हेतु दबाब नहीं बनाता। यहाँ तक कि वह दिसम्बर में भारत आता है पर अपनी माँ की खोज–खबर लेने अपने घर नहीं जाता। यह असंवेदनशीलता रूह को कंपा देने वाली है। ऐसे बेटे की माँ जीकर भी क्या करेगी। और यही शायद आशा जी ने किया। अब एक सुसाइड नोट मिलने के बाद पुलिस का भी यह मानना है कि आशा साहनी ने आत्महत्या की थी।

यह तो रही बेटे की बात। अब आती है समाज की बारी क्योंकि आशा के अन्य रिश्तेदारों का हमें कुछ पता नहीं परन्तु न भूलें वह कोई अकेला बंगला नहीं था। एक सोसाइटी में फ्लेट था। माना आशा जी ने अवसाद में सबसे दूरी बनाली थी, वे चिड़चिड़ी और शंकालु हो गयीं थीं परन्तु एक महिला डेढ़ वर्ष से अपने फ्लैट में मरी पड़ी हो और सोसाइटी में रहने वाले लोगों को कुछ पता न हो यह आश्चर्य की बात होने के साथ हमारे समाज का चेहरा भी दिखाती है। हम केवल अपनी आपाधापी में लगे पड़े हैं। परिवार ही नहीं समाज के सरोकार भी दरक रहे हैं। आशा साहनी की मौत के लिए केवल उनका बेटा या उनके पड़ोसी ही नहीं हम सब यानी यह पूरा समाज भी दोषी है। जीवन के अंतिम काल में बोलने को भी तरसने वाले इन बुजुर्गों की तकलीफ को कोई समझना ही नहीं चाहता क्योंकि सब अपने आप में व्यस्त हैं। यह सामाजिक क्षरण की ऐसी घटना है जिस पर समाज शास्त्रियों को गंभीरता पूर्वक सोचना चाहिए। आशा अकेली नहीं थीं जो इस दर्दनाक दौर से गुजर रही थीं।

इस वर्ष जून–जुलाई में एजवेल फाउंडेशन ने देश भर में 50000 बुजुर्गों से बात की। उनका निष्कर्ष है कि 43 प्रतिशत बुजुर्ग रिश्तों के विपरीत प्रवाह–जनित अकेलेपन के कारण उत्पन्न मनोवैज्ञानिक समस्याओं से ग्रस्त हैं। 45 प्रतिशत बुजुर्गों के बच्चे उनकी इच्छा और आकांक्षाओं पर ध्यान नहीं देते। इस समस्या का स्थायी हल वृद्धाश्रम भी नहीं हैं, वह केवल एक तात्कालिक उपाय है। तभी लखनऊ के जानकीपुरम स्थित शान्ति छवि धाम में पिछले छह सालों से रह रहे सुधीर कुमार (87 वर्ष), जो एक बड़े अधिकारी थे, फादर्स–डे पर अपना दर्द छिपा न सके। उन्होंने कहा, 'मेरे बच्चों से पूछिए, उन्होंने अपने पिता को क्यों छोड़ दिया। मैं ही केवल अकेला नहीं हूँ, मेरे जैसे यहाँ 70 बुजुर्ग हैं, जो अपने बच्चों के होते हुए आज वृद्धाश्रम में रह रहे हैं।'तो स्पष्ट है कि वृद्धाश्रम इस समस्या का इलाज नहीं है। भारत जैसे देश में वृद्धाश्रमों की संख्या बढ़ना प्रगति का नहीं अवनति का द्योतक है। अपने बुजुर्ग माँ–बाप को वृद्धाश्रम में भेजना प्राण को देह से अलग करने के समान है। ऐसा विचार तभी आ सकता है जब हम स्वभाव से सरल और तरल न हों। शुष्कता असंवेदनशीलता की निशानी है, जबकि संवेदनशील होना तरलता की। सात्विक गुणों के समावेश के लिए पारिवारिक संस्कारों का होना जरुरी है।

आशा साहनी के केस में सभी इकाईयाँ बुरी तरह फेल हुयी हैं। बेटे की भूमिका तो ऐसी है कि यही कहा जा सकता है कि भगवान किसी को ऐसा बेटा न दे। जाँच एजेंसी पुलिस ने आशा के मोबाइल नंबर पर फोन कर, और निरुत्तर रहने पर यह समझकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर ली कि आशा जी वृद्धाश्रम में रहने चली गयीं हैं, और तो और आस पड़ोस में रहने वालों और सोसाइटी के अधिकारियों ने भी सहज भाव से यही मान लिया। जैसा हमने कहा कि निर्माणशाला अर्थात् परिवार में संस्कार देने का चलन उपेक्षा का शिकार हो गया अथवा आज के माता–पिता स्वयं उन आदर्शों पर नहीं चल रहे जिनसे संतान प्रेरणा ले सके, अन्यथा ऋषियों के निर्देश को जो परिवार और समाज अपने जीवन और चलन में स्थान दें तो कोई कारण नहीं है कि आशा साहनी जैसी वीभत्स घटनाओं की पुनरावृत्ति हो।

वस्तुतः कमजोर होते परिवार ही समस्या के मूल में हैं। परिवार स्वस्थ संस्कारों के निर्माण स्थल हैं। संस्कारित परिवारों में आज भी वृद्धजनों को धरोहर समझा जाता है न कि बोझ। वे अनुत्पादक कदापि नहीं हैं उनके अनुभव का खजाना किसी भी पीढ़ी की झोली भरने में समर्थ है इसीलिए कहा है–

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।।

गाँठ बाँध लीजिये कि पितरों के मरने के बाद वर्ष में 15 दिनों में उनका श्राद्ध करना श्राद्ध है ही नहीं, यह अविद्याजन्य मूर्खता है कि कुछ तथाकथित ब्राह्मणों को इन दिनों में खिला–पिलाकर तृप्त कर देना पितरों को तृप्तिकारक होता है। पितरों का श्राद्ध और तर्पण रोजाना विना अनध्याय के कीजिए। यह दैनिक कर्तव्य है इसीलिए भारतीय मनीषा द्वारा पंच महायज्ञों में परिगणित किया गया है।

देखिये महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में श्राद्ध व तर्पण के सत्यार्थ को प्रकाशित करते हुए क्या लिखते हैं– 'श्राद्ध अर्थात् श्रत् सत्य का नाम है, 'श्रत्सत्यं दधाति यया क्रियया सा श्रद्धा, श्रद्धया यत्क्रियते तच्छ्राद्धम्' जिस क्रिया में सत्य का ग्रहण किया जाय, उसको श्रद्धा और जो श्रद्धा से कर्म किया जाय उसका नाम श्राद्ध है और 'तृप्यन्ति तर्पयन्ति यने पितृ तत्तर्पणम्' जिस–जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता–पितादि पितर प्रसन्न हों और प्रसन्न किये जायँ, उसका नाम तर्पण। परन्तु यह जीवित पितरों के लिए है मृतकों के लिए नहीं।

पितृतर्पण के अन्तर्गत पितरों को तृप्त करने के क्रम में आचार्य दयानद लिखते हैं– उन सबको अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न, वस्त्र, सुन्दर यान आदि देकर अच्छे प्रकार जो तृप्त करना अर्थात् जिस–जिस कर्म से उनका आत्मा तृप्त और शरीर स्वस्थ रहे, उस–उस कर्म से प्रीतिपूर्वक उनकी सेवा करनी वह श्राद्ध और तर्पण कहाता है।

यह है वैदिक ऋषियों की व्यवस्था। इसका एक एक शब्द जैसे मोती है, इसका मनन जो भी करेगा और जिस परिवार में इसका पालन होगा मजबूरी समझकर नहीं आत्मीयता के साथ होगा, पितरों की सेवा प्रीति की चाशनी में लिपटी होगी, उसमें आशा रानी अकेलेपन से लड़ती हुयीं आत्महत्या नहीं करेंगी यह सुनिश्चित है, परन्तु ध्यान रखें यह सतत् प्रक्रिया है। जैसा व्यवहार हम अपने माता–पितादि के साथ करेंगे वैसा ही हमारी संतानें हमारे साथ करेंगी।

– उदयपुर, राजस्थान,
मो.:–9314235101, 800580848

गाय को राष्ट्रमाता का दर्जा देने वाला पहला राज्य बना उत्तराखंड

गाय को राष्ट्रमाता घोषित करने का प्रस्ताव सदन में सर्वसम्मति से पारित

आर्य समाज इन्दिरापुरम में 11 कुण्डीय यज्ञ

आर्य समाज इन्दिरापुरम में 11 नवम्बर, 2018 को 11 कुण्डीय विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया है। प्रातः 9 बजे से 1 बजे तक होने वाले इस यज्ञ में महेन्द्र भाई जी महामंत्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् यज्ञ के ब्रह्मा होंगे तथा मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य पधार रहे हैं। मधुर भजनों का रसास्वादन श्रीमती सुदेश आर्या के द्वारा कराया जायेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजसेवी श्री विनोद त्यागी जी करेंगे। कार्यक्रम स्थल मंदिर सत्संग भवन, गेट नं.–5, ए.टी.एस. एडवांटेज, इंदिरापुरम।

आर्य समाज बैंक एन्क्लेव लक्ष्मीनगर, दिल्ली का 31वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बैंक एन्क्लेव लक्ष्मीनगर, दिल्ली का 31वाँ वार्षिकोत्सव 4 से 7 अक्टूबर, 2018 तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर 4 अक्टूबर को सायं 3 से 5 बजे तक आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें श्रीमती गायत्री मीणा जी का मुख्य उद्बोधन होगा। 5 से 7 अक्टूबर, 2018 तक यज्ञ, भजन, संगीत व भव्य कथा प्रातः 7 से 8 बजे तक तथा सायं 8 से 10 बजे तक निरन्तर होगी। इस अवसर पर श्री राजू वैज्ञानिक के प्रवचन और श्री सरस सहदेव के भजनोपदेश सम्पन्न होंगे। रविवार को प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक पं. दिनेश कुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ का आयोजन किया जायेगा। दोपहर 1.30 ऋषि प्रसाद के साथ कार्यक्रम सम्पन्न होगा। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून में शरदुत्सव का भव्य आयोजन

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून में 3 से 7 अक्टूबर, 2018 तक शरदुत्सव का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी के प्रवचन तथा नरेश दत्त आर्य, पं. सत्यपाल पथिक एवं श्री सुचित नारंग के भजनोपदेश होंगे। बुधवार, 3 अक्टूबर से रविवार, 7 अक्टूबर, 2018 तक प्रतिदिन योगसाधना प्रातः 5 से 6 बजे तक संध्या एवं यज्ञ प्रातः 6.30 से 8.30 बजे तक और भजन तथा प्रवचन का कार्यक्रम 10 से 12 बजे तक चलेगा। इसी प्रकार सायंकाल 3.30 से 6 बजे तक यज्ञ एवं संध्या तथा रात्रि 7.30 से 9.30 बजे तक भजन एवं प्रवचन होंगे। इस अवसर पर 6 अक्टूबर को विशाल शोभा यात्रा का भी आयोजन किया गया है। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के तत्वावधान में श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् का प्रथम अधिवेशन

दिनांक 30 सितम्बर, 2018 प्रातः 9 बजे से

स्थान : श्री नरेन्द्र भवन, राज मोहल्ला नारायण गुडा, सुल्तान बाजार, हैदराबाद

देश के समस्त गुरुकुलों के समादरणीय आचार्यों एवं आचार्याओं से निवेदन है कि अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन हरिद्वार के अवसर पर 'श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्' का गठन किया गया था। परिषद् का प्रथम अधिवेशन 30 सितम्बर, 2018 (रविवार) को श्री नरेन्द्र भवन, राज मोहल्ला नारायण गुडा, सुल्तान बाजार, हैदराबाद में प्रातः 9 बजे से प्रारम्भ होगा। इस सम्बन्ध में प्रो. विट्ठलराव आर्य जी (हैदराबाद) ने सूचित किया है कि गुरुकुलों के आचार्या एवं आचार्यों के आने–जाने का थर्ड ए.सी. रेल का मार्ग व्यय, आवास, भोजन एवं उचित सम्मान दिया जायेगा। गुरुकुलों की एकरूपता के लिए यह एक आवश्यक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। हमें इसमें गुरुकुलों में सैद्धान्तिक शिक्षण के पाठ्यक्रम की एकरूपता के लिए विशेष विमार–विमर्श करना है। गुरुकुल में आने वाली समस्याओं का समाधान, छात्र एवं छात्राओं की प्रतियोगिताएँ, संस्कृत भाषण आदि विविध विषयों पर चर्चा के लिए हम सभी को एकत्रित होना है। समय की न्यूनता को ध्यान में रखते हुए उपरोक्त विषयक अपने विचार एवं सुझाव श्रीमद्दयानन्द वैदिक परिषद् कार्यालय 119, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली–49 के पते पर भेजने का कष्ट करें। (यदि सम्भव हो तो एक प्रति ई–मेल द्वारा – gurukulparishad@gmail.com पर प्रेषित करें।) जिससे इन विषयों पर गम्भीर चिन्तन किया जा सके।

वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार तथा वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा हमारा मुख्य उद्देश्य एवं कर्त्तव्य है। आप 29 सितम्बर, 2018 को सायं अथवा 30 सितम्बर, 2018 को प्रातः 8 बजे तक श्री नरेन्द्र भवन, राज मोहल्ला नारायण गुडा, सुल्तान बाजार, हैदराबाद पहुँचने का कष्ट करें। जिससे संगोष्ठी के समय प्रातः 9 बजे आप उपस्थित रह सकें। आप अपने आने–जाने का आरक्षण कराकर ई–मेल द्वारा परिषद् कार्यालय में शीघ्र प्रेषित करें तथा टिकट की छायाप्रति साथ में अवश्य लावें जिससे आयोजकों को व्यय विवरण बनाने में सुविधा रहेगी। (प्रो. विट्ठलराव आर्य जी का मोबाइल नं.–9849560691 है। आवश्यकता पड़ने पर आपसे सम्पर्क करें।)

सभी को हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती,
अध्यक्ष श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

लागत मूल्य 4100/– रुपये

भारी छूट पर उपलब्ध

4100/– रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 200/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।